शोध-पत्र आमंत्रित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

27-28 मार्च, 2020

'हिंदी शिक्षण का प्रयोजनमूलक स्वरूप और वैश्विक हिंदी'

हिंदी विभाग

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय

रोनो हिल्स, दोईमुख

अरुणाचल प्रदेश-791 112

ई.मेल : hindiseminarrgu@gmail.com

संकल्पना-बिन्दु

(Concept Note)

हिन्दी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के परास्नातकीय प्रयोजनमूलक हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम की ओर से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रस्तावित है। इस आयोजन का विषय है, 'हिंदी शिक्षण का प्रयोजनमूलक स्वरूप और **वैश्विक** हिंदी'।

हिंदीतरभाषी राज्य होने के बावजूद अरुणाचल प्रदेश में हिंदी की स्वैच्छिक स्वीकार्यता पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों की तुलना में सर्वाधिक है। यहाँ बोलचाल के स्तर से लेकर कामकाजी तौर पर हिंदी सहज ढंग से प्रयुक्त होती हैं। सामान्यतया शिक्षण-प्रशिक्षण की दृष्टि से हिंदी का यह स्वरूप विविध रूपों में समादृत है। विशेषकर हिंदी शिक्षण का प्रयोजनमूलक स्वरूप तथा उनका प्रयोग-व्यवहार उल्लेखनीय है। वर्तमान में हिंदी शिक्षण के इस व्यावहारिक तथा सम्प्रेषणमूलक स्वरूप के बारे में गंभीरता से सोचे जाने की जरूरत है। इस विषय में बौद्धिक संवाद एवं संगोष्ठी आयोजित किए जाने की आवश्यकता है। अरुणाचल में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में जिस तरह लोकप्रिय है, उसे देखते हुए हिंदी भाषा के कामकाजी प्रारूप तथा उस की व्यावहारिक कार्य-प्रणाली पर प्रकाश डाला जाना अपेक्षित है।

अतएव, इस परिकल्पना एवं उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त विषय 'हिंदी शिक्षण का प्रयोजनमूलक स्वरूप और **वैश्विक** हिंदी' का चयन किया गया है। इस आयोजन के पीछे मुख्य मकसद यह भी है कि अकादमिक रूप से यह विषय बेहद महत्त्वपूर्ण है जिस पर आगे हिंदी शिक्षण से सम्बन्धित वैकल्पिक संभावनाओं के नए द्वार खुलने की उम्मीद ज्यादा है। साथ ही, इस दिशा में जो तत्कालीन चुनौतियाँ एवं समस्याएँ देखी जा रही हैं उनका भी आंकलन-मूल्यांकन किया जाना समय की माँग है। पूर्वोत्तर में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता के बीच उसके शैक्षणिक स्वरूप का गुणात्मक मूल्यांकन इस तरह की संगोष्ठी में होना तय है। अरुणाचल प्रदेश में हिंदी का कामकाजी स्वरूप हाल के दिनों में जिस तेजी से बढ़ा हैं, उन्हें देखते हुए हिंदी की प्रयोजनीयता और उसके मुख्य अभिलक्षणों को समझा जाना जरूरी है। हिंदी अपने प्रयोजनमूलक स्वरूप में अपनी अनुप्रयुक्तता तथा वैज्ञानिकता को व्यावहारिक रूप देने में तभी सक्षम होगी जब इस दिशा में

सुचिंतित तरीके से विचार-विमर्श हों। दरअसल, हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण के अन्तर्गत आमतौर पर जो-जो व्यावहारिक कठिनाईयाँ देखने को मिलती हैं; उन पर खुलकर बातचीत एवं चर्चा आवश्यक है।

हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप पर अधिक बल देने के पीछे हमारा मुख्य उद्देश्य यह है कि आज इस क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर मौजूद हैं। हिंदी का कामकाजी क्षेत्र जिस तरीके से वैश्विक स्वरूप धारण कर रहा है उसे देखते हुए प्रयोजनमूलक हिंदी की दिशा में अर्जित कौशल, भाषागत विशेषता, अनुवाद-कार्य की निपुणता, कार्यालयी दक्षता, सम्पादन कला से जुड़ी प्रवीणता, राजभाषा से सम्बन्धित कुशलता, सिनेमा और विज्ञापन के क्षेत्र में हासिल महारत इत्यादि विद्यार्थियों को अपनी आजीविका-निर्वाह में सक्षम और मजबूत बनायेंगे। पिछले कुछ वर्षों में हिंदी की प्रयुक्तियों की भूमिका स्थानीय से लेकर **वैश्विक** स्तर तक देखी जा सकती हैं। विज्ञापन, पर्यटन, अनुवाद, दुभाषिया से लेकर मीडिया के क्षेत्र में हिंदी का व्यावहारिक योगदान जबर्दस्त है। राजभाषा के रूप में हिंदी की स्थिति सशक्त तथा **वैश्विक** रूप से संगठित हो सकी है, तो निश्चित तौर पर हिंदी-शिक्षण तथा उसके प्रयोजनमूलक स्वरूप का पक्ष न सिर्फ उल्लेखनीय, अपितु अत्यन्त विचारणीय है।

अतः अरुणाचल प्रदेश के जन-मानस के सर्वाधिक निकट पहुँची हिंदी भाषा को बोलचाल से लेकर कामकाज के विभिन्न रूपों में कैसे मजबूती प्रदान की जाये; इसे लेकर यह प्रस्तावित विषय अत्यंत प्रासंगिक है।

यह भी कि इस दिशा में राजीव गाँधी **विश्वविद्यालय** का हिंदी विभाग पिछले कई सालों से प्रयोजनमूलक हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम चला रहा है जिसकी भूमिका और जवाबदेही दोनों बढ़ी हुई है। प्रस्तावित आयोजन की रूपरेखा प्रयोजनमूलक हिंदी पाठ्यक्रम को केन्द्रीय महत्त्व प्रदान करते हुए तैयार की गई है। इस अन्तर्संवाद/संगोष्ठी से अकादमिक स्तर की हिंदी अधिक मजबूत, सशक्त तथा उत्तरोत्तर संभावनाशील हो सकेगी। साथ ही अन्तरसांस्कृतिक आदान-प्रदान के सेतु रूप में हिंदी अपने **वैश्विक** परिदृश्य में अधिक क्रियाशील एवं सहभागी बन सकेगी।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में निम्नलिखित या इनसे मिलते-जुलते अन्य उप-शीर्षकों से शोध-पत्र आमंत्रित है -

- **अरुणाचल प्रदेश और हिंदी भाषा-शिक्षण**
- **प्रयोजनमूलक हिंदी का वैश्विक परिदृश्य तथा संवादी दृष्टिकोण**
- **प्रादेशिक राजभाषा और प्रयोजनमूलक हिंदी**
- **कार्यालयी हिंदी का कामकाजी रूप एवं कार्य-प्रणाली**
- **हिंदी, अभिव्यक्ति-कला और संभाषण**
- **हिंदी कौशल और भारतीय बाज़ार**
- **राजभाषा हिंदी में रोजगार सम्बन्धी अवसर एवं संभावनाएँ**
- **हिंदी कन्वर्जेंस, प्रिंट-इलेक्ट्रानिक और आनलाइन सेवाएँ**
- **अनुवाद-कला और मीडिया में हिंदी**
- **अख़बार की हिंदी और ऑनलाइन न्यूज़**
- **विज्ञापन और हिंदी मीडिया**
- **सिनेमा और हिंदी**
- **हिंदी, कंप्यूटर-तकनीक और यूनिकोड**
- **हिंदी और ऑनलाइन माध्यम लेखन**
- **शिक्षा-जगत और अन्तरानुशासनिक हिंदी**

शोध-पत्र सारांशिका/पूरा शोध-पत्र मंगल फॉण्ट(MS-Word) में भेजने की तारीख :

शोध-पत्र सारांशिका : **20 मार्च, 2020 (Email :** hindiseminarrgu@gmail.com**)**
पूरा शोध-पत्र : **27 मार्च, 2020 (पंजीयन के समय)**
रजिस्ट्रेशन फीस : Faculty & Others : 2000/- **रु.** (**ठहरने की व्यवस्था सहित**)
Research Scholar **:** 500**/- रु.,** Student : 300**/- रु.**

नोट : शोध-पत्र वाचन के दौरान पीपीटी प्रस्तुतीकरण की सुविधा रहेगी।

संयोजक: डॉ. राजीव रंजन प्रसाद, **सह-संयोजक:** डॉ. जोराम यालाम नाबाम

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

27-28 मार्च, 2020

'हिंदी शिक्षण का प्रयोजनमूलक स्वरूप और वैश्विक हिंदी'

हिंदी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय

रोनो हिल्स, दोईमुख, अरुणाचल प्रदेश-791 112

REGISTRATION FORM

Name (in Block Letters):

Designation and Affiliation:

Mobile Number:

Email:

Title of the Paper:

Preferred Mode of Payment:

Bank Transfer/Cash

Accommodation required (Yes/No):

Food Preference: (Veg/Non-Veg)

Registration Fee:

For Academicians and others :**1000.00 INR (without accommodation)**

For Research scholars : **500.00 INR** and Students **300.00 INR**

NB: Necessary details for accommodation/payment of registration fees would be provided to individual participant on the receipt of filled-in registration form.